राजस्थान के हिंदी लेखकों की भूमिका और सामाजिक धारणा

Role and Social perception of Hindi writers of Rajasthan

डॉ. यज्ञेश नारायण पुरोहित

व्याख्याता हिन्दी
श्री नेहरू शारदापीठ (पी.जी.) महाविद्यालय
बीकानेर (राजस्थान)

परिचय प्रस्तावित शोध का महत्त्व व उद्देश्य

साहित्य और समाज में अन्योन्याश्रय संबन्ध माना जाता है। साहित्यिक आलोचकों ने साहित्य को समाज का दर्पण भी माना है। समाजशास्त्र में समाज शब्द का प्रयोग विशेष अर्थ में किया गया है। यहाँ व्यक्ति.व्यक्ति के बीच पाये जाने वाले संबंधों के आधार पर निर्मित व्यवस्था को समाज कहा गया है। समाज संबंधों के ताने.बाने के रूप होता है और यह परिवर्तित होती रहने वाली जटिल अमूर्त व्यवस्था भी है। सामाजिक संबंधों में समय के साथ निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं। आर्थिक राजनीतिक और तकनीकी कारणों से संबंधों के स्वरूप में परिवर्तन होता रहता है। समाज के विचारों भाव भावनाओं और परिस्थितियों का प्रभाव साहित्यकार और साहित्य पर निश्चित रूप से पड़ता है। किसी कथाकार को समाजबोध की सटीकता उसे विशिष्ट बनाती है।

हिंदी कहानी साहित्य की एक लोकप्रिय विधा है और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इसके आयाम विस्तृत हो जाते हैं। राजस्थान के हिंदी कथाकारों ने भारतीय समाजबोध की विविधता को रूपायित करने वाली कहानियों के माध्यम से अपनी खास पहचान बनायी। आरंभ में कहानीकारों की संवेदना केनिश्चित मानदंड बन चुके थे, लेकिन बाद के कहानीकारों ने स्वतंत्रता के पश्चात समाज में आने वाले परिवर्तनों को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से परिलक्षित कर अभिव्यक्त किया।

स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों ने परिवर्तनशील भारतीय परिवेश, समाज की विषमताओं एवं विसंगतियों को अपनी कहानी में चित्रित करने का प्रयास किया। बीसवीं सदी के पाँचवें दशक से अब तक की कहानियों के आयाम विस्तृत है। ये कहानियाँ जीवन के विविध पक्षों को समेटना चाहती है। इस दिशा में कहानी के अंतर्गत शाश्वत मूल्यों के स्थान पर मानवीय मूल्यों की चर्चा अधिक मिलती है। आज के जीवन मूल्यों में संक्रमणशीलता का दौर भी मिल जाता है। आज भी मानव अपने समाज में परिवर्तन चाहता है और उसके लिए पुरातन रीति-रिवाजा और परंपराओं को निरर्थक करार देता है।

राजस्थान के हिंदी कहानीकारों की कहानियाँ शहरी एवं ग्रामीण जीवन अनछुए पहलुओं को उजागर करने वाली हैं। कुछ कहानियाँ बालमनोदशा, मजदूरों के संघर्ष, शोषित जीवन, बेरोजगारी, नैतिक मूल्य, विस्थापन, आदिवासी संस्कृति, सांप्रदायिकता, दलित पीड़ा एवं स्त्री आत्मनिर्भरता से लेकर स्त्री मुक्ति से जुड़ी अनेक समस्याओं का चित्रण करती हैं। इन कहानियों में जातिवाद पर प्रहार, भ्रष्ट व्यवस्था तंत्र के प्रति विद्रोह का भाव, लालफीताशाही एवं समाज के अंधे पथभ्रष्ट लोगों के विरुद्ध उनकी लेखनी का प्रतिकार दिखलाई पड़ता है। इन कहानीकारों ने व्यक्ति के अकेलेपन की त्रासदी, निशक्तजन के पारपतन संघर्ष एवं सवर्ण के बीच वैवाहिक संबंध दिखलाकर व्यापक भविष्य दृष्टि का परिचय देते हुए हिंदी कथा परंपरा को भी समृद्ध किया है। इसलिए इनका अध्ययन चुनौतीपूर्ण एवं विशिष्ट है।

कुछ कहानीकारों ने पीढी-अंतराल को भी विषय बनाया है। पुरानी पीढ़ी की समझ और नई पीढ़ी की जरूरत में मेल नहीं बैठता। पुरानी पीढ़ी की दृष्टि में सबके साथ रहना बड़ी बात है तथा नई पीढ़ी के लिए यह समस्या बन जाती है। वे जिंदगी में नयापन ला कर जीवन को बेहतर बनाने की धुन में रहते हैं। कुछ कहानियाँ वरिष्ठ नागरिकों के साथ किए जाने वाले अवज्ञापूर्ण व्यवहार की शिकायत दर्ज करती हैं और समय के साथ नित्यप्रति बदल रहे संबंधों को प्रकट करती हैं। दूसरी ओर बाल-मनोविज्ञान को समुचित प्रसंगों और वातावरण के साथ प्रस्तुत करती एवं ग्रामीण अंधविश्वास, अभिशप्त धार्मिक जुनूनऔर सांप्रदायिकता, शोषित जीवन की करुण मनोव्यथा को गंभीरता से उद्घाटित करती कहानियाँ भी हैं। अनकहे कथ्यों एवं विषयों के माध्यम से समाज में निरंतर चेतना पैदा करती ये कहानियाँ समाज को नई दिशा की ओर अग्रसर करने का प्रयास करती हैं। वे हताशा और वर्जना से मुक्त नए सामाजिक उत्थानतथा उनमें नए आयामों को सृजित करने के उद्देश्य की ओर अग्रसर है।

राजस्थान के हिंदी कहानीकारों ने समाज की हर उस गति को पकड़ने का प्रयास किया है जो आदमी के जीवन को प्रभावित करने का प्रयास करती है और जिससे वह उद्वेलित होता है।

इस दृष्टि से यह शोध-कार्य अत्यंत चुनौतिपूर्ण है।

प्रस्तुत शोध कार्य में बीसवीं सदी से अब तक राजस्थान के हिंदी कथाकारों के समाजबोध पर अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाएगा।

1.बीसवीं सदी की कहानियों का अध्ययन एवं विश्लेषण कर समाज के मर्म को समझाना।

2.राजस्थान के हिंदी कहानीकारों की कहानियों में निहित सामाजिक मूल्यों की परख करना।

3.कहानी में शहरी-ग्रामीण जीवन, स्त्री आदिवासी, दलित एवं पारिवारिक संबंधों जैसे बहुआयामी पक्षों का मूल्यांकन करना।

4.सामाजिक अवधारणा और स्तरों के तत्त्वों की पहचान कर उसकी मूल संवेदना पर प्रकाश डालना।

5.आधुनिक परिवर्तनों के फलस्वरूप समाज और व्यक्ति के संबंधों की दशा और दिशा की पहचान करना ।

Review (Work already done on the subject of proposed Research

Study:

अध्ययन विषय पर में किये गये शोधकार्य का पुनरावलोकन -

अतीत के संचित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन किया जाता है एवं उनके आधार पर शोध परियोजना की दिशा निर्धारित की जाती है। शोध को गति प्रदान करने के उद्देश्य से वैचारिक पोषक की आवश्यकता होती है। अतः इस संदर्भ में शोध परियोजना की समीक्षा आवश्यक है।

पूर्व में इस विषय को केन्द्र में रखते हुए शोध ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। ऐसा शोध विषय की नवीनता के चलते हुआ है। इन्दिरा सिंह स्वातंत्र्योत्तर महिला कहानीकारों की कहानियों में सामाजिक चेतना शशि पोद्दार ने आधुनिक हिंदी कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन व द्वारका प्रसाद वर्मा रांगेय राघव के कथा साहित्य में जनजीवन, ओम प्रकाश भाटिया राजस्थान की समकालीन हिंदी कहानी और कहानीकार स्वयं प्रकाश, सुमन कुँवर हिंदी कहानियों में बदलती युवा मानसिकता और अर्चना शर्मा आठवें दशक की हिंदी कहानी में नगरीय बोध जैसे ग्रंथ ही उपलब्ध हैं। लेकिन इन ग्रंथों में राजस्थान के हिंदी कथाकारों का समाजबोध पर समग्रत किसी ने दृष्टिपात नहीं किया है। इसके अतिरिक्त इनमें संचार के नये माध्यमो- देब पत्रिका आदि में प्रकाशित राजस्थान के कहानीकारों की हिंदी कहानियों को भी सम्मिलित नहीं किया गया है। अतः विवेच्य शोध-काय एक नूतन प्रयास के रूप में माना जा सकता है।

Research Gap identified in the proposed Field of Investigation

(Based on the Review) :

प्रस्तावित शोध कार्य व पूर्व में किये गये शोध कार्य के अन्तराल का आकलन -

प्रस्तावित विषय पर किसी भी शोधार्थी ने एक समग्र अध्ययन प्रस्तुत नहीं किया है। अभी तक हुए शोध कार्यों में कहानीकार विशेष, युवा मानसिकता, नगरीय बोध एवं जनजीवन विषय के एकांगी रूप ही मिलते हैं, लेकिन समग्र समाजबोध पर अभी तक किसी भी शोधार्थी की दृष्टि नहीं गई है। कहानी- साहित्य पर जिस भी विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्य हुआ है वह मेरे शोध कार्य के विषय से पूर्णतः भिन्न है।

अतः इस शोध कार्य में बीसवीं सदी के पाँचवें दशक से अब तक के राजस्थान के हिंदी.. कथाकारों की कहानियों का अध्ययन कर उनके समाजबोध पर शोध प्रस्तुत किया जाएगा। भारत के संदर्भ में यह कालखंड समाज में अनेक प्रकार के परिवर्तनों और उथल-पुथल से भरा है। किसी भी साहित्यकार के लिए ऐसे परिदृश्य का सामना चुनौतीपूर्ण होता है। विवेच्य शोध कार्य में राजस्थान के

कथाकारों के द्वारा महसूस की गई इस चुनौती का अध्ययन किया जाएगा। इस शोध में कई ऐसे नए बिंदु उभरकर सामने आएँगे, जो अब तक प्रकट नहीं हुए हैं। इसलिए प्रस्तावित शोध शोध-अंतराल को पाटने का कार्य करेगा।

Major Hypothesis : मुख्य परिकल्पना

राजस्थान के हिंदी कथाकारों के समाजबोध पर शोध की अवधारणा व्यापक रूप से सदैव परिलक्षित होती रही है। इसलिए इस अध्ययन से स्वाधीनता प्राप्ति के बाद की कहानियों के सामाजिक परिप्रेक्ष्य को परिलक्षित करने का प्रयास किया जाएगा।

शोध अध्ययनार्थ प्रस्तुत शोध प्रबंध में कहानीकारों के द्वारा प्रस्तुत तत्कालीन सामाजिक परिवेश को दर्शाया जाएगा। लेखक मानवीयता का पक्षधर होता है जो सामाजिक जड़ताओं को भेदने का कार्य अपनी लेखनी के माध्यम से करता है। भारतीय समाज के संश्लिष्ट स्वरूप की परख प्रस्तुत कालखंड की कहानी के माध्यम से की जाएगी।

Research Methodology: शोधपद्धति-

आधुनिक शोध में प्रसिद्ध विद्वान जोसफ गिवाल्डी की पुस्तक एम.एल.ए हैंडबुक को काफी महत्त्व प्रदान किया जाता है। शोधार्थी अपने शोध में इसका मुख्य रूप से प्रयोग करते हैं। प्रस्तावित शोध, इंडेक्स पद्धति (Index Method) से शोध कार्य करना उचित प्रतीत होता है। इस पद्धति में अधिक से अधिक संदर्भ ग्रंथों का संकलन किया जाता है और उन्हें एक साथ तर्कसम्मत क्रम में व्यवस्थित कर अध्ययन किया जाता है। इस आधार पर चिंतन का एक रूप विकसित होता है जो शोध को दिशा प्रदान करता है।

आंकड़ों का स्रोत-

प्राथमिक स्रोत - स्वातंत्र्योत्तर परिदृश्य के महत्त्वपूर्ण कहानीकारों का साक्षात्कार लेकर अपने शोध विषय के लिए नवीन सामग्री सगृहीत की जाएगी। ऐसे साक्षात्कार राजस्थान के कथाकारों के वैशिष्ट्य उद्घाटन में अति महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान करेंगे। इसके साथ-साथ लेखकों की रचनावली का आधार ग्रंथ के रूप में उपयोग किया जाएगा, जिससे उनके सृजन का आकलन सही ढंग से हो सके।

द्वितीयक स्रोत

1.कहानियों पर केंद्रित शोध प्रबंध

2.कहानी आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में लिखी गई पुस्तक।

3.इस संदर्भ में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं एवं प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व इंटरनेट पर प्रकाशित

उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया

Tentative Chapter Scheme

प्रस्तावित शोध प्रबंध की अध्याय योजना

प्रस्तावित शोध कार्य की अस्थायी अध्ययन योजना शोध की प्रगति, तथ्यात्मक उपलब्धियों व कारणों से संभावित कुछ परिवर्तनों के अतिरिक्त प्रस्तावित शोध कार्य के शीर्षक और उपशीर्षकों सहित अस्थायी अध्याय योजना निम्नलिखित है

राजस्थान के हिंदी कथाकारों का समाजबोध

1. समाजबोध: आशय एवं स्वरूप

(क) समाज की अवधारणा

(ख) समाज लक्षण एवं अवयव

(ग) भारतीय समाज एक अध्ययन

(घ) नयी सदी का समाज मूल्यांकन

2. हिंदी कहानी और राजस्थान के कथाकार

(क) हिंदी कहानी का आरंभ

(ख) हिंदी कहानी का विकास

(ग) राजस्थान के कथाकार

(घ) कहानी सर्वेक्षण मूल्याकन

समकालीन साहित्यिक विमर्श : कहानी के परिप्रेक्ष्य में

(क) उत्तर आधुनिकता रूप निर्मिति

(ख) स्त्री-विमर्श आरंभ, विकास और विस्तार

(ग) दलित विमर्श

(घ) आदिवासी और अन्य विमर्श

(ग) स्त्री एवं बाल-मन

(घ) दलित एवं आदिवासी

(ङ) जीवन मूल्य मूल्याकन

राजस्थान के हिंदी कथाकारों का समाजबोध: संवेदनात्मक अध्ययन

(क) राजस्थान के हिंदी कथाकारों की संवेदना के धरातल

(ख) सामाजिक जीवन के आया

(ग) स्त्री एवं बाल-मन

(घ) दलित एवं आदिवासी

(ड) जीवन मूल्य मूल्यांकन

राजस्थान के हिंदी कथाकारों का समाजबोध: शिल्पगत अध्ययन.

(क) गद्य की संवेदनशीलता

(ख) भाषायी सृजनात्मकता

(ग) अंचल के शब्दों का प्रयोग

(घ) मुहावरे और लोकोक्तियाँ मूल्यांकन

राजस्थान के हिंदी कथाकारों के समाजबोध की संभावनाएँ एवं

सीमाएँ

उपसंहार

Reference cited : संदर्भ सूची-

(अ) आधार ग्रंथ

कहानी संग्रह

1. अशोक आत्रेय: उदाहरण के लिए, विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 1986

2. आलमशाह खान :साँसों का रेवड़ पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1994:

3. आलमशाह खान: दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताबघर प्रकाशन, 2014

4. केदार प्रसाद मीणा: आदिवासी कहानियाँ अलख प्रकाशन

5. चरण सिंह पथिक : बात यह नहीं है, सूर्य प्रकाशन मंदिर, 2005

6. चरण सिंह पथिक : मेरी प्रिय कथाएँ ज्योतिपर्व प्रकाशन, गाजियाबाद, 2014

7. दीप्ति कुलश्रेष्ठ : किसे करे फरियाद लोक चेतना प्रकाशन, 2013-

8. दीप्ति कुलश्रेष्ठ : काश! लोक चेतना प्रकाशन, 2013

9. दीप्ति कुलश्रेष्ठ : परिणति लोक चेतना प्रकाशन, 2013-

10. भगवान अटलानी : भगवान अटलानी की लोकप्रिय कहानियाँ प्रभात प्रकाशन, 2018

11 भगवान अटलानी : बंद आसमान का आखिरी दरवाजा, साहित्यागार जयपुर, 1987:

12 मनीषा कुलश्रेष्ठ : कुछ भी तो रूमानी नहीं अंतिका प्रकाशन, 2008

13. मनीषा कुलश्रेष्ठ : किरदार, राजपाल एड सन्स 2018

14. मनीषा कुलश्रेष्ठ : कठपुतलियाँ भारतीय ज्ञानपीठ 2010

15. यादवेंद्र शर्मा चद्र' : विशिष्ट कहानिया पराग प्रकाशन, 2008